Establishment - 1965

School of Studies in Literature & Languages
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C. G.) 492010

Mail Address-
shailshar25@gmail.com

Introduction to the School of Studies in Literature & Languages - Established in 1965,the School of Studies in Literature & Languages has been a center of excellence in linguistic and literary studies for nearly six decades. Under the leadership of Prof. Shail Sharma, the School offers diverse programs, including courses in Linguistics, Hindi, English, Chhattisgarhi, and Sindhi, along with diploma and certificate courses. In a significant recent development, the School introduced an M.A. in Sindhi Program from the 2024-25 session, building upon the Diploma in Sindhi, which has been offered since May 1, 2019. Additionally, new research projects in Hindi are currently underway, reinforcing the School's commitment to language and literary research.To enhance the learning experience, the Language Lab has been upgraded with advanced software, smart boards, and improved amenities, ensuring a more interactive and technology-driven academic environment. With its focus on interdisciplinary learning and research, the School continues to play a vital role in language preservation, literary scholarship, and academic innovation in Chhattisgarh and beyond.

Vision-

- Extensive studies of Linguistics &Languages - English, Hindi, Chhattisgarhi, French, Sindhi.
- Diversified spectrum of Research field :Descriptive, Historical, Social, Cultural, Geographical, Comparative Studies.
- To create a better world driven by technology and rooted in values through enlightened and empowered teachers.

Mission–

- **To develop the department as a centre of excellence for higher education at national and international level**
- **To impart quality education and develop high quality Scholars with ingenuity, creativity, innovation, leadership, ethical values and societal commitment for the integrity and prosperity of our nation.**
- **To deepen understanding of the students about the greater purpose of life and instill in them the value of self-esteem and self-reliance:**
  - **By providing world-class education through innovative teaching of the finer points of Literature and Languages.**
  - **By promoting qualitative research in the field of Language and Literature.**
  - **By creating environment conducive to overall development of students**

Facilities-

i. Wifi/LAN equipped classrooms
ii. ICT Seminar Hall
iii. Well furnished Language Lab
iv. Girls Common Room
V. Research Scholar Room
vi. Departmental Library

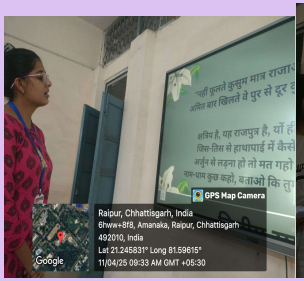

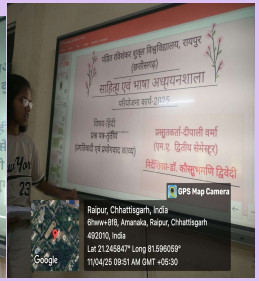

Linguistics: Language is an essential part of human life. A society without language is inconceivable. Language is the most appropriate and efficient medium of communication. As language exists in society, it is a subject of humanities but when it deals with its sounds, structure and meaning it becomes 'Science'. Linguistics covers all those areas that deal with the subjects of language acquisition and language teaching. It also enquires how the change in the modern scenario affects language. The School has produced **5 D. Litt.**, **103 Ph.D., & 316 M.Phil**. in Linguistics till date. Currently the department has **09 research scholars** pursuing Ph.D.

Diploma/Certificate Courses: Along with the research activities and P.G. courses, Diploma and Certificate courses are also a part of the curriculum. Diploma in European and Asian Languages includes teaching of English and French. The purpose of this program is to augment proficiency of students in English and foreign languages. In present scenario there is a growing demand of people with working knowledge in foreign languages in different professions. The department has produced many Diploma holders in Phonetics and Indian Languages, English, French, Russian, German, Telugu, Hindi, Urdu and Arabic till date.

English: Since its inception in 1965 the department had been offering Post Graduate programme in Linguistics only. In the due course of time, a need and growing demand for the integration of English in the curriculam was realised. This lacuna was filled with the commencement of **M.A. (English) in 1991** and **M.Phil. (English) in 1994**.The courses in English have achieved remarkable success. The School has produced **24 Ph.D**. and **280 M.Phi**l.till date. The School continues to impart its share in the development of Chhattisgarh state by paving the way for success and achievement of aspirations and goals in all fields.Currently the department has **06 research scholars** pursuing Ph.D.

हिंदी - साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु राज्य की प्रतिष्ठित अध्ययनशाला में विनोद कुमार शुक्ल , निर्मल वर्मा , विद्यानिवास मिश्र , अशोक वाजपेयी, पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रो. मोहन जैसे हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकारों एवं ओजस्वी वक्ताओ के व्याखान्य से इस अध्ययनशाला की गरिमा में श्रीवृद्धि हुई | स्थापना के बाद से ही हिंदी को सहज सरल बनाने एवं विस्तार देने की दिशा में अध्ययनशाला का उतरोतर प्रयास रहा है | विदयार्थियों को नेट,सेट,एवं जे.आर.एफ. के लिए तयार करने,समय की मांग के अनुरूप राजभाषा प्रशिक्षण, प्रयोजनमूलक हिंदी , भारतीय साहित्य,लोक साहित्य का पाठयक्रम में समावेश कर भाषा को विविध क्षेत्रों में परिभाषित करना भी उद्देश्य रहा है। मध्यकालीन, रीतिकालीन, आधुनिक हिंदी साहित्य, लोक साहित्य, काव्यशास्त्र का तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक परिवेश में शोध-कार्य अध्ययनशाला का ध्येय है। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की जिज्ञासा में वृद्धि, उनके अध्ययन को गुरुता प्रदान करने के साथ ही शिक्षकों के शिक्षण-कौशल एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अध्ययनशाला में समय-समय पर परिसंवाद, संगोष्ठी, सम्मेलन एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहा है। हिंदी भाषा एवं साहित्य को बहुआयामी रूप देने के साथ ही विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच एवं जागरूकता लाने तथा क्षेत्र की लोक-कलाओं को जीवंत बनाए रखने की दिशा में इस अध्ययनशाला का विशेष योगदान रहा है। सत्र **1998-99** से एम. ए. (हिंदी) की एवं **2002-03** से एम्. फिल. (हिंदी) का अध्यापन प्रारंभ हुआ। इस अध्ययनशाला से **1** डी. लिट्., **44** पी-एच.डी., एवं **140** एम. फिल. हो चुके हैं। वर्ष **2004** से हिंदी में पी-एच.डी. की उपाधि प्रदान किए जाने की शुरूआत हुई। वर्ष **2010** में डी. लिट्. की उपाधि प्रदान की गई। यहाँ एम. ए. में **20** एवं एम. फिल. में **10** विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा है। वर्तमान में यहाँ **11** शोधार्थी हिंदी साहित्य के विविध क्षेत्रों में शोध कार्य कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ी - छत्तीसगढ़ प्रदेश की मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है। इस समृद्ध भाषा का पहला व्याकरण सन् **1885** में लिखा गया। छत्तीसगढ़ प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद 28 नवंबर 2007 को छत्तीसगढ़ी भाषा को राजभाषा घोषित किया गया। छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य, और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य सन् **2013** में छत्तीसगढ़ी में एम. ए. पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया। **40** सीटों के साथ यह पाठ्यक्रम लगातार सात वर्षो से सफलतापूर्वक संचालित है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ी साहित्य के अध्ययन के साथ-साथ इस भाषा के विकास एवं आगामी प्रयोग एवं अनुवाद के माध्यम से इसे समृद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। इन दस वर्षों में **378** छात्रों को एम. ए. की उपाधि प्राप्त हो चुकी है। श्री केयूर भूषण, पद्मश्री सुरेंद्र दुबे, श्री लक्ष्मण मस्तुरिया, श्री दानेश्वर शर्मा, श्रीमती निरुपमा शर्मा, श्री चंद्रकुमार चंद्राकर, डॉ. विनय कुमार पाठक जैसे अनेक छत्तीसगढ़ी भाषा के विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किए गए। सन् **2013** में सात दिवसीय कार्यशाला 'छत्तीसगढ़ी का मानकीकरण' पर एवं पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्री श्यामलाल चतुर्वेदी, पद्मश्री सुरेंद्र दुबे, श्री दानेश्वर शर्मा, प्रो. राजेंद्र मिश्र, पद्मश्री मोक्षदा (ममता) चंद्राकर, प्रो. वेद प्रकाश बटुक, पद्मश्री महादेव पाण्डेय, श्री नंदकिशोर शुक्ल, श्री नरसिंह प्रसाद, प्रो. सत्यभामा आडिल, डॉ. परदेशी राम वर्मा, डॉ. बिहारी लाल साहू सहित अनेक विद्वानों ने तथा जिज्ञासु छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थी सहित **300** से अधिक लोगों ने अपने विचार रखे।
सन् **2023** में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'छत्तीसगढ़ी: भाषा, संस्कृति और पत्रकारिता' का आयोजन किया गया, जिसमें पद्मश्री अनुज शर्मा, पद्मश्री अनूप रंजन पाण्डेय, श्री संजीव बख्शी (साहित्यकार), प्रो.रामनारायण पटेल (दिल्ली), श्री मनोज वर्मा (छत्तीसगढ़ी सिनेमा निर्माता, निर्देशक), सुश्री रमादत्त जोशी, डॉ. उर्मिला शुक्ल सहित अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखें। संगोष्ठी में प्रतिदिन **200** से अधिक छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों ने प्रतिभागिता की।

संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र - संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र की स्थापना **1 मई 2019** को हुई। यहाँ सत्र 2020-2021 से डिप्लोमा इन नेशनल लैंग्वेज: सिंधी का कोर्स प्रारंभ हो गया है। इन तीन वर्षों में **85** विद्यार्थियों को पी.जी.डिप्लोमा की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

Programme offered	Seats	Programme offered	Seats	Programme offered	Seats
M.A. (Linguistics)	20	Diploma in European and Asian Languages-English	30	Ph.D. (Linguistics)	as per university norms
M.A. (English)	30	Diploma in European and Asian Languages-French	30	Ph.D. (Hindi)	as per university norms
M.A. (Hindi)	20	Certificate course in Translation	30	Ph.D. (English)	as per university norms
M.A. (Chhattisgarhi)	40	Diploma in National Languages-Sindhi	30	D.Lit. (Linguistics)	as per university norms
M.A. (Sindhi)	20	M.Phil. (Linguistics) M.Phil. (Hindi) M.Phil. (English)	10 10 10	D.Lit (Hindi)	as per university norms

Teaching Faculty

Prof. Shail Sharma
Head

Dr. Madhulata Bara
Asso. Prof.

Dr. M. Karmoker

Dr. S. Mishra

Dr. V. Mishra

Satyajeet Singh

Dr. Kaustubh Mani Dwivedi

Dr. K. Ghrithlahare

Dr. S. Singh

Dr. Baratu Ram Dhruw

Dr. A. Patel

S. No.	Investigator	PRoJECT TOPIC	FUNDING AGENCY	FUNDING AMoUNT (INR)	Period
01	Dr. Madhulata Bara	समकालीन परिप्रेक्ष्य में माड़िया जनजाति का शिल्पकला और लोकपरंपराओं की चुनौतियाँ एवं संभावनाएं (छत्तीसगढ़ के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)	ICSSR	35,00000.00	1 April 2024 to 31 March 2026